# HINDI (MIL)

## SYLLABUS FOR HIGHER SECONDARY FIRST YEAR COURSE

**प्रस्तावना :**

दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी समझते हुए पढ़ने व सुनने के साथ-साथ हिंदी में सोचने और उसे मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की सामान्य दक्षता अर्जित कर चुका होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आने के बाद इन सभी दक्षताओं को सामान्य से ऊपर उस स्तर तक ले जाने की दरकार होती है, जहाँ भाषा का इस्तेमाल भिन्न-भिन्न व्यवहार-क्षेत्रों की मांगों के अनुरूप किया जा सके। आधार पाठ्यक्रम साहित्यिक बोध के साथ साथ भाषाई दक्षता के विकास को ज्यादा अहमियत देता है। यह पा्यक्रम उन विद्यार्थिीं के लिए उपयोगी साबित होगा, जो आगे विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ेंगे या विज्ञान-समाजविज्ञान के किसी विषय को हिंदी माध्यम से पढ़ना चाहेंगे। यह उनके लिए भी उपयोगी साबित होगा, जो उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद किसी तरह के रोजगाहर में लग जाएंगे। वहां कामकाजी हिंदी का आदारफूत अध्ययन काम आएगा। जिन विद्यार्थियों की दिलचस्पी जनसंचार माध्यमों में होगी, उनके लिए यह पाठ्यक्रम एक आरंभिक पृष्ठफूमि निर्मित करेगा। इसके साथ ही यह पाठ्यक्रम सामान्य रूप से तरह-तरह के साहित्य के साथ विद्यार्थीयों के संबंध को सहज बनाएगा विद्यार्थी भाषिक अभिव्यक्ति के सूक्ष्म एवं जटिल रूपों से परिचित हो सकेंके, वे यथर्थ की अपने विचारों में व्यवस्थित करने के साथन के तौर पर भाषा का अधिक सार्थक उपयोग कर पायेंगे और उनमें जीवन के प्रति मानवीय संवेदना एवं सम्यक् दृष्टि का विकास हो सकेक।

**उद्देश्य :**

- ❖ इन माध्यमों और विधाओं के लिए उपयुक्त भाषा, प्रयोग की इतनी क्षमता उनमें आ चुकी होगी कि वे स्वयं इससे जुड़े उच्चतर पाठ्यक्रमों को समझ सकेंगे।
- ❖ सामाजिक हिंसा की भाषिक अभिव्यक्ति की समझ।
- ❖ भाषा के अंदर सक्रिय सत्ता संबंध की समझ।
- ❖ सृजनात्मक साहित्य को सराह पाने ौर उनका आनंद उठाने की क्षमता का विकास तथा भाषा में सौंदर्यात्मकता उत्पन्न करने वाली सृजनात्मक युक्तियों की संवेदना का विकास।
- ❖ विद्यार्थियों के भीतर सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, जेंडर, क्षेत्र, भाषा संबंधी) के प्रति साकारात्मक एवं विवेकपूर्ण रवैाये का विकास।
- ❖ पठन-सामग्री को भिन्न-भिन्न कोणों से अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का अभ्यास कराना तथा नजरिये की एकांगिकता के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।
- ❖ विद्यार्थी में स्तरीय साहित्य की समझ और उसका आनंद उठाने की स्फूर्ति, विकास, उनमें साहित्य को श्रेष्ठ बनाने वाले तत्वों की संवेदना का विकास।
- ❖ विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति और उसकी क्षमताओं का बोध।
- ❖ कामकाजी हिंदी उपयोग के कौशल का विकास।
- ❖ संचार माध्यमों (प्रिंट ौर इलेकट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से परिचय और इन माध्यमों की मांगों के अनुरूप मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का विकास।

**शिक्षण-युक्तियाँ**

- कुछ बातें इस स्तर पर हिंदी शिक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में सामान्य रूप से कही जा सकती हैं। एक तो यही कि कक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। चुँकि इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को कंटस्थ कर लेने की कोई अपेक्षा नहीं है, इसलिए चीजों को समझने और उस समझ के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता विकासित करना ही हमारा काम है। इस योग्यता के विकास के लिए कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच निर्बाध संवाद जरूरी है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधिक व्यक्त करेंगे, उतनी ही ज्यादा सफाई उनमें आ जाएगी।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनकी कक्षा में अलग-अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सकें।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसी प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह शिखा सके कि वे भी सब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे है। इससे विद्यार्थियों में उसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जायेंगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पायेंगे।
- कक्षा-अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में सेमिनार, टुयुटोरियल कार्य, समस्या-समाधान कार्य, समूह चर्चा, परियोजना कार्य, स्वाध्याय आदि पर हबल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधित अंशों को देखते हुए यह जरूरी है कि समय-समय पर इस माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी स्कूल में बुलाया जाए तथा उनकी देख-रेख में कार्यशालाएं आयोजित की जाएं।

# HINDI (MIL)

## SYLLABUS FOR HIGHER SECONDARY FIRST YEAR COURSE

**One Paper** **Time : Three hours** **Marks : 100**

**Unitwise Distribution of Marks & Periods :**

| Unit | Topics | Marks | Periods |
|---|---|---|---|
| Unit-I | अपठित बोध (गद्यांश और काव्यंश- बोध) (15+5) | 20 | 40 |
| Unit-II | रचनात्मक लेखन (कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन) | 25 | 45 |
| Unit-III | पाठ्यपुस्तक : आरोह (भाग-1) (20+20) | 40 | 60 |
| Unit-IV | पूरक पुस्तक : वितान (भाग-1) | 15 | 35 |
| | **Total :** | **100** | **180** |

**Unitwise Distribution of Course contents:**

**Unit-I : अपठित बोध :** **20**

1. काव्यंश बोध : (काव्यंश पर आधारित पाँच लघुउत्तरात्मक प्रश्न) 05
2. गद्यांश बोध : (गद्यांश पर आधारित बोध, प्रयोग, रचनातरण, शर्षक आदि पल लघुउत्तरात्मक 15

**Unit-II : रचनात्मक लेखन : (कामकाजी हिंदी और रचनात्मक लेखन) :** 10+15=25

1. निबंध (विकल्प सहित) 10
2. कार्यालयी पत्र (विकल्प सहित) 05
3. निर्धारित पुस्तक अभिव्यक्ति और माध्यम के आधार पर जनसंचार की विधाओं पर प्रश्न 05
   - ❖ प्रिंट माध्यम (समाचार और सम्पादकीय)
   - ❖ रिपोर्ट/आलेख
4. फीचर लेखन (जीवन-संदर्भ से जुड़ी घटना और स्थितियों पर) 05

**Unit-III : आरोह (काव्य भाग-20 अंक, गद्य भाग-20 अंक) :** **40**

**(काव्य भाग)**

1. दो काव्यंशों में से किसी एक पर अर्थग्रहण के चार प्रश्न 2+2+2+2=8
2. दो में से एख काव्यांश के सौन्दर्यबोध पर दो प्रश्न 3+3=6
3. कविता की विषय-वस्तु पर आधारित तीन लघुउत्तरात्मक प्रश्न 2+2+2=6

**(गद्य भाग)**

4. दो में से एख गद्यांश पर आधारित अर्थग्रहण संबंधित 4 प्रश्न 2+2+2+2=8

| | | |
|---|---|---|
| 5. | पाठों की विषयवस्तु पर आधारित 5 में से 4 बोधत्मक प्रश्न | 3+3+3+3=12 |
| **Unit-IV : वितान भाग-1** | | **15** |
| 1. | पाठों की विषयवस्तु पर आधारित चार में से तीन लघुउत्तरात्मक प्रश्न | 3+3+3=9 |
| 2. | विषयवस्तु पर आधारित दो में से एक निबंधात्मक प्रश्न | 06 |

**निर्धारित पुस्तकें :**

1. आरोह भाग-1 एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित
1. वितान भाग-1 एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित
2. अभिव्यक्ति और माध्यम- एन सी ई आर टी द्वारा प्रकाशित

❑ ❑ ❑

Learnfo